डॉ. श्यामसुंदर दुबे की रचना-दृष्टि

गोपाल भूरिया

डॉ. श्यामसुंदर दुबे का जन्म बुंदेलखंड के एक गाँव हतवाई में १२ दिसंबर, १९४४ को हुआ। ये लोक-जीवन के अनेक अनुभवों से आपूरित अनुभवों की पूँजी को लेकर अपने जीवन में सक्रिय रहने वाले रचनाकार हैं। ये अपने रचनाकर्म में निरंतर स्मृतियों के पुनसृजन में रत रहकर अपने समय से मुठभेड़ लेते हुए अपने कथ्य को नित नवीन बनाते रहे हैं।

डॉ. दुबे का रचनारत व्यक्तित्व बहुआयामी है। वे कवि, कथाकार, समीक्षक, ललित निबंधकार और लोक विद् के रूप में अपनी रचनाशीलता को अभिव्यक्त करते आ रहे हैं। उन्होंने जो भी रचा वह—अपने कथ्य अपनी कहन में अद्वितीय है। लोक जीवन के अनाविल छवियों को अपने सृजन में सजीव करने वाले डॉ. दुबे हिंदी के उन रचनाकारों में अपना स्थान सुरक्षित कर चुके हैं, जिन्होंने इस देश के आंचलिक अनुभवों को व्यापक परिदृश्य में प्रस्तुत किया है।

डॉ. दुबे की भाषिक चेतना का विविधवर्णी संसार उनकी रचनाओं को सहज संप्रेषणीय बनाता है। भाषा के अनेक तेवरों को उनके साहित्य में अनुभव किया जा सकता है। उन्होंने अपने रचना-कर्म में अनुभूति और अभिव्यक्ति के स्तर पर अपनी निजी पहचान बनाई है।

प्रस्तुत कृति में दुबे की रचना-दृष्टि का अनुशीलन किया गया है। इस अनुशीलन में उनका जो रचना-व्यक्तित्व उभर कर आता है—वह भारतीयता की सहज प्रकृति की शिनाख्त कराने वाला है। वे भारतीय जीवन मूल्यों के प्रबल पक्षधर के रूप में अपने लेखन में सक्रिय हैं—उन्हें पढ़ने का अर्थ है अपनी अस्मिता को बहुत शिद्दत के साथ जानना-समझना! डॉ. भूरिया ने डॉ. श्यामसुंदर दुबे के रचनाकार को अनेक कोणों से इस कृति में परखा है।

डॉ. श्यामसुंदर दुबे की रचना-दृष्टि

डॉ. गोपाल भूरिया

विजया बुक्स

ISBN : 978-93-81480-31-1

प्रकाशक : विजया बुक्स
1/10753 सुभाष पार्क, गली नं. 3
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032
फोन : 011-22822514; 9910189445
Email : vijyabooks@gmail.com
rajeev02sharma@gmail.com

© : लेखक

प्रथम संस्करण : 2013

मूल्य : 275/-

मुद्रक : विकास कम्प्यूटर एण्ड प्रिंटर्स,
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032

आमुख

हर युग संक्रमण के दौर से गुजर कर आगे बढ़ता है। आज का युग जिस दौर से गुजर रहा है, उसमें मनुष्य की अवधारणाओं में, उसकी जीवन यापन की शैली और मूल्यों में भारी परिवर्तन उपस्थित हुआ है। इस परिवर्तन के दौर ने सभी कला विधाओं को विशेषकर साहित्य को गहराई से प्रभावित किया है। मनुष्य की बुद्धि तर्कप्रधान दृष्टि सूक्ष्म संपन्न और वैज्ञानिक हुई है। फलतः मानव समाज में जहाँ रूढ़ियों के प्रति विद्रोह की चेतना आई है वहीं मानव मात्र की एकता के प्रति भी उसकी आस्था बढ़ी है। जाति और संप्रदाय के घेरे टूटे हैं। शोषित, दलित मानव के प्रति आस्था के स्वर सुदृढ़ हुए हैं। इस संदर्भ में डॉ. श्यामसुंदर दुबे का साहित्य एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है। डॉ. श्यामसुंदर दुबे बहुआयामी प्रतिभा के धनी सर्जक कलाकार हैं। उन्होंने अपने साहित्य में ग्राम्य जीवन की संवेदनाओं तथा काल चेतना के प्रवाह को शब्दों में समेट कर दैनिक जीवन में घटने वाली छोटी-बड़ी घटनाओं, मानव जीवन की सच्चाईयों और उसकी गहराईयों को उजागर किया है।

डॉ. श्यामसुंदर दुबे की पहचान प्रमुख चिंतक, विचारक, समीक्षक, ललित निबंधकार, नवगीतकार और कथाकार के रूप में है। उन्होंने समकालीन कविता, नाटक, लोक साहित्य, समीक्षा आदि विधाओं पर भी अपनी लेखनी चलाकर बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया है। वे बिना किसी साहित्यिक मतवाद का आश्रय लिए आधुनिक जीवन के यथार्थ का सूक्ष्म एवं सहज रूप प्रस्तुत करते हैं। उनके साहित्य में ग्राम्य जीवन विशेष रूपसे बुंदेलखंड के अंचल विशेष का सामाजिक जीवन अपनी संपूर्णता में रूपायित हुआ है। ग्राम्य जीवन की उन्मुक्त प्रकृति, सामाजिक विश्वास, रूढ़ियाँ, परंपराएँ तथा अंतः बाह्य यथार्थ के रागात्मक चित्र पूर्ण कलात्मकता के साथ चित्रित हुए हैं। वे मानवीय गुणों के सहज विकास में विश्वास करते हैं।

मैंने अपने अध्ययन काल में प्रेरणादायी प्राध्यापक स्व. डॉ. चंद्रप्रकाश शुक्लजी की प्रेरणा से 'मरे न माहुर खाय' उपन्यास पढ़ा था। तभी से मैं पं. श्यामसुन्दर दुबे की रचनात्मकता से बहुत प्रभावित हुआ। डॉ. दुबेजी से मिलने मैं हटा (दमोह) पहुँच गया। वहाँ उनके व्यक्तित्व और संपूर्ण साहित्य से साक्षात्कार हुआ। यह जानकर कि उनके साहित्य पर अब तक कोई विशिष्ट कार्य संपन्न नहीं हुआ है। मैंने दुबेजी क

अनुक्रम

	आमुख	5
1.	जीवन-क्रम	9
2.	कृति-क्रम	16
3.	कथा-दृष्टि	54
4.	निबंध-दृष्टि	82
5.	कविता-दृष्टि	99
6.	भाषा-दृष्टि	108
7.	समाहार-दृष्टि	122
	परिशिष्ट	134

डॉ. गोपाल भूरिया

जन्म दिनांक	:	10.07.1976
जन्म स्थान	:	तलावली, झाबुआ
शिक्षा	:	एम.ए., पी-एच.डी.
कृतित्व	:	विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में स्फुट लेखन, खेल जगत में भागीदारी तथा राष्ट्रीय छात्र-सेन में लेफ्टिनेंट।
पुरस्कार	:	साहित्यिक एवं खेल के क्षेत्र में राजस्तरीय पुरस्कार।
संप्रति	:	शहीद चंद्रशेखर आज़ाद स्नातकोत्तर महाविद्यालय, झाबुआ में सहायक प्राध्यापक (हिंदी)।
वर्तमान पता	:	35 ऑफीसर्स कॉलोनी, झाबुआ (म. प्र.)।
स्थायी पता	:	ग्राम-पोस्ट, तलावली, तहसील -मेघनगर,ज़िला-झाबुआ(म.प्र.)